अंलकार

परिभाषा => • काव्यशोभाकरान् धर्मान
अलङ्कारान् प्रचक्षते ॥
– काव्य की शोभा बढाने वाले धर्मों को 'अंलकार' कहते है।

• उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्
हारादिवदलंकारास्तेऽनुप्रासोपमादय ॥
– जो अंगभुत शब्द और अर्थ द्वारा शब्दार्थ मे उत्कर्ष उत्पन्न करके विद्यमान होने वाले रस को हार इत्यादि के समान उपकार करते है। वे अनुप्रास अंलकार तथा उपमा अंलकार कहलाते है।

• अंलकार दो प्रकार के होते है –
(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार।
– जो शब्द पर आश्रित होते है, वे 'शब्दालंकार' कहलाते है। उसी प्रकार जो अंलकार अर्थ पर आश्रित होते है, वे 'अर्थालंकार' कहलाते है तथा पर्यायवाची शब्द रख देने पर भी अलंकार की स्थिति बनी रहती है, उसे 'अर्थालंकार' कहते है।

Scanned with CamScanner

(1) अनुप्रास अलंकार

लक्षण => वर्णसाम्यमनुप्रासः

अनुवाद => व्यंजन वर्णों की समानता को 'अनुप्रास' अलंकार कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि स्वर वर्णों की असमानता होने पर भी व्यंजन वर्णों की समानता जहाँ दृष्टिगोचर होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

यह अनुप्रास अलंकार दो प्रकार का होता है – (1) छेका अनुप्रास।
(2) वृत्त्यनुप्रास।

उदाहरण => ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी दध्रे कामपरिक्षामकामिनी गण्डपाण्डुताम्॥

उदाहरण व्याख्या => प्रस्तुत पद्य में 'स्पन्द और मन्द' इन पदों में न तथा द व्यंजन वर्णों की उसी क्रम की आवृत्ति हुई है। इसी प्रकार 'गण्ड और पाण्डु' इन पद में ण् तथा ड इन वर्णों की आवृत्ति हुई है। अतः यह छेकानुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

xxx ——— xxx

Scanned with CamScanner

(2) यमक अलंकार

लक्षण ⇒ अर्थे सत्यर्थभिन्नानां सा पुन: श्रुति:।

अनुवाद ⇒ भिन्न अर्थ वाले वर्ण समुदाय का पूर्व क्रम से ही आवृत्ति होना 'यमक अलंकार' कहलाता है। वर्ण समुदाय की आवृत्ति लाटानुप्रास में भी होती है। इसीलिए यहाँ लक्षण में (अर्थ भिन्नानां) यह पद दिया गया है क्योंकि लाटानुप्रास में एकार्थक वर्ण समुदाय की आवृत्ति होती है, भिन्नार्थक की नहीं।

उदाहरण ⇒ सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम।
सन्नारीभरणोमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय॥

उदाहरण अनुवाद ⇒ हे राजन! सती नारियों के आभूषण स्वरूप उमा के इन्दुशेखर (शिव) की प्राप्त करने वाले इन्दुशेखर (शिव) की अराधना करके शत्रु गज विनाशक युद्ध करने वाले कपट रहित आप विजय कीजिए।

स्पष्टीकरण ⇒ (i) प्रस्तुत पद्य में 'सन्नारीभरणोमाय' इसका प्रथम प्रयोग "सन्नारीभरणा या उमा ताम अयने इति तम" इस अर्थ में भगवान शिव का बोध

करवाता है।

(ii) द्वितीय पंक्ति 'सन्नारी भरणी माय' अर्थ "सन्ना : मृता : अरीणाम् इभा गजा: यत्र तादृश रण मुद्पे तया भ्रतम इस विग्रह के अनुसार यह पद्य युद्ध का बोध करवाता है। अतः वर्ण समुदाय को उसी क्रम में आवृत्ति तथा अर्थों की भिन्नता के आधार पर यहाँ 'यमक अलंकार' का प्रयोग हुआ है।

xxx ——— xxx

अर्थालंकार

(3) उपमा अंलकार

लक्षण ⇒ साधर्म्यमुपमा भेदे।

अनुवाद ⇒ जहाँ उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर भी दोनो में गुण, क्रिया आदि की समानता का वर्णन किया जाता है, वहाँ उपमा अंलकार होता है अर्थात् उपमान तथा उपमेय का समान धर्म (गुण) के साथ सम्बन्ध वर्णन ही उपमा अंलकार है।

विशेष्य/उपमेय/गुणी : जिसमें कोई विशेषता होती है, वह उपमा।

विशेषण /उपमान / गुण : उस विशेषता को बताने वाले शब्द

Scanned with CamScanner

उपमान होते हैं।

उदाहरण => स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा॥

उदाहरण। अनुवाद => सपने मे भी विजयश्री तुम्हें नहीं छोड़ सकती, ठीक उसी प्रकार एक सती साधवी पत्नी अपने पति का कभी त्याग नहीं कर सकती।

स्पष्टीकरण => प्रस्तुत उदाहरण में 'स्वाधीन पतिका' यह उपमान है तथा 'विजय श्री' यह उपमेय है। इस उदाहरण में 'नमुञ्चति' अर्थात 'अपरित्याग' यह साधारण धर्म है तथा उपमेय का साधर्म्य (समान धर्म) होने के कारण यहाँ उपमा अंलकार है।

xxx ——→ xxx

(4) उत्प्रेक्षा अंलकार

लक्षण => सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्॥

अनुवाद => जब प्रकृत वस्तु (उपमेय) कि उपमान के साथ संभावना (समान जैसा / एक जैसा दिखाने का प्रयास) की जाती है तो वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। सम्भावना का अर्थ है - किसी वस्तु के यथार्थ रूप को जानते हुए भी उसमें

Scanned with CamScanner

अन्य वस्तु की कल्पना करना। उत्प्रेक्षा के लिए यह आवश्यक है कि जिसकी सम्भावना की जाती है, वह कोई यथार्थ वस्तु होनी चाहिए। यह संभावना सादृश्य के आधार पर होनी चाहिए। यह उत्प्रेक्षा मन्ये, शंके, ध्रुवम्, प्रायः, नूनम्, स्यात्, इव आदि शब्दों से जानी जाती है लेकिन ऐसा सदा होना ऐसा आवश्यक नहीं है।

उदाहरण => लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीव वाञ्जनं नभः।
असत्पुरुष सेवेव दृष्टिर्विफलतां गता॥

उदाहरण अनुवाद => अंधकार का लेपन शरीर पर हो रहा है मानो आकाश से काजल बरस रहा है। दुष्ट पुरुष की सेवा से मानो धरती निष्फल हो गई है।

स्पष्टीकरण => प्रस्तुत उदाहरण में अन्धकार की अंगों में व्याप्ति को लेपन के रूप में उत्प्रेक्षित किया गया है तथा कालिमा के प्रसरण (फैलना) में वर्षण की सम्भावना की गई है। अतः इस में उत्प्रेक्षा अलंकार है क्योंकि उदाहरण में प्रयुक्त 'इव' शब्द सम्भावना के अर्थ में है।

(5) रूपक अंलकार

लक्षण => तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः ॥

अनुवाद => उपमान तथा उपमेय का अभेदारोप रूपक अंलकार कहलाता है। रूपक का शाब्दिक अर्थ है - "रूपयति - एकताम् नयति इति रूपकम्" अर्थात् जिन उपमान या उपमेय का भेद प्रसिद्ध है। उनमें अत्यन्त साम्य के कारण। अभेद का आरोप करना रूपक अंलकार कहलाता है।

रूपक अंलकार तीन प्रकार के होते है : (1) सांग
(2) निसंग
(3) परम्परित

उदाहरण => ज्योत्स्ना भस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी-
न्यस्तध्यानव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम् ॥
द्वीपाद्द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्य च्छलेन ॥

उदाहरण अनुवाद => जो चन्द्रिका रूपी भस्म से शुभ्र है। तारे रूपी अस्थियाँ को धारण करती है। अन्तः ध्यान

को क्रीड़ा में तत्पर है। ऐसी यह रात्रि रूपी योगिनी चन्द्र रूपी सुप्र कपाल में कलंक के रूप में स्थित हुए सिद्धांजन (काजल) के चूर्ण को लिए हुए एक द्वीप से दूसरे द्वीप भ्रमण कर रही है।

स्पष्टीकरण → प्रस्तुत उदाहरण में रात्रि को कापालिकी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ रात्रिरेव-कापालि की यह प्रधान रूपक है। "ज्योत्स्नाभ भस्म:" आदि सहायक रूपक हैं। इस प्रकार उपमेय तथा उपमान का अभेद आरोपण होने के कारण यहाँ रूपक अलंकार है।

---

(6) अपह्नुति अलंकार

लक्षण → प्रकृतं यन्निषिध्यान्यत्साध्यते सात्व ह्नुति।

अनुवाद → जहाँ प्रकृत अर्थात वर्णनीय वस्तु का निषेध करके अन्य की सिद्धि की जाती है, वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है अर्थात जहाँ उपमेय को असत्य बतलाकर उपमान को सत्य रूप में स्थापित किया जाता है, वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है।

अपह्नुति दो प्रकार के होते हैं- शाब्दी तथा आर्थि।
अर्थात जहाँ शब्द द्वारा उपमेय की असत्यता कही जाती है वहाँ शाब्दी अपह्नुति अलंकार होता है तथा जहाँ अर्थ के द्वारा उपमेय की असत्यता प्रतीत होती है उसे आर्थि अपह्नुति कहते हैं।

उदाहरण => नेदं नभोमण्डलमम्बुशीकरा:।
नेताश्च तारा नवफेन भङ्गा॥
नायं शशि: कुण्डलित फणीन्द्रो।
नाऽसौ कलङ्क शशयोमुरारि॥

उदाहरण अनुवाद => ये आकाश मंडल नहीं है समुद्र है। ये तारे नहीं है ये तो झाग के बुलबुले है। ये चन्द्रमा नहीं है कुंडली मार कर बैठा साँप है। ये कलंक नहीं है भगवान विष्णु है।

स्पष्टीकरण => प्रस्तुत उदाहरण में प्रत्येक स्थल पर प्रस्तुत को निषेध करके अप्रस्तुत की स्थापना की गई है। यथा - "यह आकाश मण्डल नहीं समुद्र है", "यह तारे नहीं झाग के बुलबुले है", "यह कलंक नहीं शयनस्तु भगवान विष्णु है" इस प्रकार सर्वत्र उपमेय का निषेध कर उपमान की स्थापना गम्य होने के

Scanned with CamScanner

कारण अपह्नुति अलंकार है।

×××——→×××

(7) विभावना अलंकार

लक्षण ⇒ क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्ति-
विभावना ॥

अनुवाद ⇒ विभावना अलंकार वह है – जहाँ क्रिया का निषेध होने पर भी फल का कथन किया जाता है, पर विभावना अलंकार होता है। साहित्य दर्पण के अनुसार विभावना अलंकार के दो भेद हैं –
(i) उक्तनिमित्त। (ii) अनुक्तनिमित्त
जबकि आचार्य मम्मट ने किसी भेद का निरूपण नहीं किया है।

उदाहरण ⇒ कुसुमितलताभिरहताऽप्यधत्त
रुजमलिकुलैरदष्टाऽपि ।
परिवर्तते स्म नलिनीलहरी
भिरलोलिताऽप्यघूर्णत सा ॥

उदाहरण अनुवाद → नायिका

स्पष्टीकरण ⇒ प्रस्तुत उदाहरण में पतिविमुखता नायिका का चित्रण किया गया है। नायिका की विभिन्न स्थितियों में बिना कारण के ही कार्योत्पत्ति दृष्टिगोचर हो रही है। यथा - "नायिका का पुष्पित लताओं से ताडित न की जाती हुई होने पर भी वेदना का अनुभव करना। भ्रमर गणों के द्वारा न काटी हुई होने पर भी लोट-पोट होना कमलिनी युक्त लहरों से चलित न की हुई होने पर भी चक्कर लगाना ये सभी स्थितियां बिना कारण के कार्योत्पत्ति की परिचायक है, अतः यहाँ विभावना अंलकार है

xxx —— xxx

(8) श्लेष अंलकार

लक्षण ⇒ वाच्यभेदेन भिन्ना : यदपदभाषणा स्पृशः। श्लिष्यन्ति शब्दा : श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा ।।

अनुवाद ⇒ अर्थ भेद के कारण भिन्न - भिन्न होकर भी जहाँ शब्द एक उच्चारण के विषय होते हुए एक रूप प्रतीत होते है. वह श्लेष अंलकार है। अर्थात काव्य के क्षेत्र में जब शब्द एक ही रूप में उच्चरित होकर अर्थ की दृष्टि से भिन्नता को लिए हुए

एक रूप मे भाषित होते हैं वहाँ श्लेष अंलकार होता है। यह श्लेष अंलकार अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है। यथा- वर्ण, पद, लिंग, भाषा, प्रकृति, प्रत्यय, विभक्ति तथा आदि।

उदाहरण ⇒ पृथुकार्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेष-
परिजनं देव:।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममा-
वयो: सदनम्॥

स्पष्टीकरण ⇒ प्रस्तुत उदाहरण में 'पृथुकार्त-स्वरपात्रं' इस वाक्यांश का याचक के पक्ष में अर्थ होगा - पृथुनां बालानां आर्त स्वरस्य पात्रम् पात्रम्। (रोते बिलबिलाते बालकों से युक्त घर।)
राजा के पक्ष में इस वाक्य का अर्थ होगा - पृथुनि कार्तस्वरस्य पात्राणि यत्र तत्। (अत्यधिक स्वर्ण पात्रों से युक्त घर।)
यहाँ एक ही शब्द याचक पक्ष में तथा राजा पक्ष में भिन्न-भिन्न अर्थ दे रहा है अत: यहाँ श्लेष अंलकार है।

	याचक	राजा
	बिना बिछौने के जमीन पर लेटने वाले परिजनों से युक्त।	अलंकृत सेवकों से सज्जित हुआ घर।
	चूहों द्वारा खोदी गई पृथ्वी से युक्त घर।	विलासयुक्त हाथियों से युक्त घर।

×××——×××

(9) विशेषोक्ति अलंकार

लक्षण ⇒ विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।

अनुवाद ⇒ जहाँ सभी कारणों के उपस्थित होने पर भी कार्य की उत्पत्ति का कथन नहीं किया जाता वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है। अर्थात् कारणों के एकत्र होने पर भी कार्य के न होने का कथन करना विशेषोक्ति अलंकार कहलाता है। यह तीन प्रकार के होते हैं - (i) अनुक्तनिमित्ता
(ii) उक्तनिमित्ता
(iii) अचिन्त्य निमित्ता विशेषोक्ति।

Scanned with CamScanner

उदाहरण => कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान यो जने-जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे

उदाहरण अनुवाद => जो कपूर के समान जल जाने पर भी प्रत्येक मनुष्य पर अधिकार रखने वाला है उस अकुंठित पराक्रम वाले मकरकेतु (कामदेव) को नमस्कार है।

स्पष्टीकरण -> प्रस्तुत उदाहरण में कामदेव को कपूर के समान भस्म हो जाने से कामोत्पत्ति न होने के सारे कारण उपस्थित है फिर भी 'कामोत्पत्ति न होना' इस कार्य का अभाव देखा जा रहा है। अत: यहाँ विशेषोक्ति अलंकार है।

xxx —— xxx

(10) अर्थान्तरन्यास अलंकार

लक्षण => सामान्य वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा॥

अनुवाद => जहाँ साधर्म्य या वैधर्म्य के विचार से सामान्य का विशेष वस्तु से या विशेष का सामान्य से समर्थन

किया जाए वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। साधारण भाषा में कहे तो ये दो वाक्य होते है - जिसमें पहला वाक्य अर्थ का कथन करता है, दूसरा विशेष अर्थ का कथन करता है।

उदाहरण => निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहत: शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्॥

उदाहरण अनुवाद => अपने ही दोषो से जिन व्यक्तियों का मन व्याप्त है, उन्हें अतिसुन्दर वस्तु भी असुंदर दिखाई देती है। ठीक उसी प्रकार पित्तरोग (पीलिया का रोग) से ग्रस्त व्यक्ति को चन्द्रमा के समान शुभ्र वर्ण वाला शंख भी पीला दिखाई देता है।

स्पष्टीकरण -> प्रस्तुत उदाहरण में प्रथम पंक्ति में सामान्य बात की गई है और उसका साधर्म्य के द्वारा 'पश्यति' इत्यादि विशेष बात के द्वारा समर्थन किया गया है। अतः प्रस्तुत उदाहरण में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

xxx ——→ xxx

Scanned with CamScanner

(11.) अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार

लक्षण → अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया

अनुवाद ⇒ जो अप्रस्तुत वस्तु का वर्णन (प्रशंसा), प्रस्तुत वस्तु की प्रतीति का निमित्त होता है, वहाँ अप्रस्तुत अलंकार है अर्थात् अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार वहाँ होता है जहाँ अप्रस्तुत की प्रशंसा द्वारा प्रस्तुत विषय की प्रतीति होती है।

उदाहरण ⇒ राजन् राजसुता न पाठयति, मां
देव्योऽपि तूष्णीं स्थिताः।
कुब्जे भोजय मां कुमार सचिवैर्नाद्यापि
किं भुज्यते ॥
इत्थं नाथ शुकस्तवारि भवने
मुक्तोऽध्वगैः पञ्जरात्
चित्रस्थानवलोक्य शून्य

उदाहरण अनुवाद ⇒ हे राजन्! आपके शत्रुओं के भवन में पथिकों द्वारा पिंजरे से मुक्त किया हुआ शुक, सूनी अटारी में राजा के चित्र को देखकर इस प्रकार कहता है - हे राजन्! राजपुत्री मुझे नहीं पढ़ाती रानीयां भी नहीं आती है। हे कुब्जा

मुझे भोजन कराओ। हे कुमार तुम्हारे साथ मैंने भी अब तक भोजन नहीं किया।'

स्पष्टीकरण। => प्रस्तुत उदाहरण में राजा के अप्रस्तुत होने पर भी उसके चित्र फलक को देखकर शुक (तोता) द्वारा की गई प्रवचना (उलाहना) अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार का उदाहरण है।

××× ⟶ ×××

Scanned with CamScanner